Hindi
Explore–Journal of Research
Peer Reviewed Journal
ISSN 2278 – 0297 (Print)
ISSN 2278 – 6414 (Online)

https://www.patnawomenscollege.in/journal

लिपि, भाव मूलक लिपि और इमोजी

• दीप्ति प्रिया • सोनी कुमारी • भाग्य श्री
• दीपा श्रीवास्तव

Received : December, 2021
Accepted : January, 2022
Corresponding Author : Deepa Srivastava

Abstract: *मानव द्वारा मनःस्थिति और विचारों को व्यक्त करने वाले भावपूर्ण संकेत क्रमशः लिपि, अक्षर, शब्द, वाक्य और भाषा में रूपांतरित होकर संप्रेषण का माध्यम बने। चित्र तथा चरित्र के द्योतक इमोजी आज भावाभिव्यक्ति के नवीन तथा सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम हैं। जिस प्रकार प्राचीनकाल में भावों को दर्शाने के लिए चित्रों की मदद ली जाती थी, उसी प्रकार आज के तकनीकी युग में सामाजिक माध्यमों पर इमोजी का प्रयोग हो रहा है।*

जुड़े हुए हाथ, हँसते–मुसकुराते स्माइली, रोते चेहरे, उँगली की मुद्राओं से बनें विजयसूचक चिन्ह, वस्तुओं के चित्र आदि। आज भाव–संप्रेषण के सशक्त माध्यम बनकर उभरे हैं। इनके द्वारा सुखद–दुखद अनुभूतियों को लिपि तथा शब्दों के बिना भी सुगमता से प्रकट किया जा सकता है। इस परिदृश्य में यह कहना असंगत नहीं होगा कि लिपियों के स्थान पर अब इमोजी के प्रयोग को प्राथमिकता दी जा रही है।

विचार विनिमय की प्रक्रिया को सरलतम तथा स्पष्ट बनाने के कारण ये आज संप्रेषण की अनिवार्यता बन चुके हैं। प्रेषणीयता की जो क्रिया अतीत में भावमूलक लिपि द्वारा संपादित होती थी, उसका क्रियान्वयन अब इमोजी द्वारा होता है। अतएव इनके अंतर्संबंध से इनकार नहीं किया जा सकता। इमोजी की उत्पत्ति की मूल प्रेरणा शिगेटका कुरिता ने अवश्य भावमूलक लिपि से ली होगी। इस दृष्टि से इमोजी को भावमूलक लिपि का उन्नत तथा डिजिटल रूप कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

*संकेत–शब्द **(Keywords)** : लिपि, भावमूलक लिपि, सामाजिक माध्यम, इमोजी।*

दीप्ति प्रिया
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2019-2022,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

सोनी कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2019-2022,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

भाग्य श्री
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2019-2022,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

दीपा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
पटना वीमेन्स कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय,
बेली रोड, पटना–800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepa.hindi@patnawomenscollege.in

भूमिकाः

मानव के महान आविष्कारों में लिपि का स्थान सर्वोपरि है। मानव सभ्यता के विकास में वाणी के बाद लेखन का ही सबसे अधिक महत्व है। मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार लिपि की खोज की। प्रारंभ में कुछ रेखाएँ खींची गईं जो चित्रों में परिवर्तित हुई। कालांतर में इन्हीं चित्रों का प्रयोग अभिव्यक्ति के साधन के रूप में किया जाने लगा तथा इनका विकास लिपि के रूप में हुआ। आज संसार में लगभग 400 विभिन्न लिपियों का प्रयोग होता है। इनमे से अनेक लिपियों का आरंभ एवं विकास प्राचीन काल की कुछ प्रमुख लिपियों से हुआ है।

भावमूलक लिपि लिपि के विकास परंपरा की ही एक कड़ी है। इसमे स्थूल वस्तुओं के माध्यम से भावों को व्यक्त किया जाता है।

भावमूलक लिपि का ही आधुनिक रूप है– इमोजी। हम इंटरनेट पर सामान्य संदेश के माध्यम से अपनी शारीरिक भाषा और बोलने के तरीके को स्पष्ट तरीके से संप्रेषित नहीं कर सकते, इसलिए इमोजी का प्रचलन बढ़ा है। इमोजी दो शब्दों के समाहार से बना है– इ तथा मोजी। जापानी भाषा में इ का अर्थ है– चित्र तथा मोजी का अर्थ है चरित्र। इमोजी को सम्मिलित रूप से सचित्र संदेश कहा जाता है। यह विभिन्न प्रकार की भावनात्मक स्थिति तथा परिस्थितियों का व्यक्त चित्र होता है। यह हमारी मनःस्थिति को विभिन्न रूपों में व्यक्त करता है। विभिन्न एप्स पर पशु–पक्षी, फूल, पौधे, खाद्य सामग्री, उँगलियाँ, हथेली, शरीर के विभिन्न अंग, कपड़े, जूते आदि के एनिमेटेड रूप एवं गुस्सा, स्नेह, नाराजगी आदि मनोभावों को व्यक्त करने वाले छोटे–छोटे पीले रंग की स्माइली का प्रयोग इमोजी के रूप में विभिन्न सामाजिक माध्यमों जैसे– इंस्टाग्राम,फेसबुक, व्हाट्सएप्प, आदि पर किया जाता है। 1999 में इमोजी का सर्वप्रथम प्रयोग किया गया। इमोजी के जन्मदाता जापान के शिगेटका कुरिता हैं। हर वर्ष 17 जुलाई को 'विश्व इमोजी दिवस' मनाया जाता है। इमोजी की प्रसिद्धि के कारण इसे ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में जोड़ा गया और वर्ष 2015 में इसे वर्ड ऑफ ईयर माना गया।

कुछ प्रचलित इमोजी –



– खुले मुँह के साथ बंद आँखों वाला चेहरा हास्य का प्रतीक है।



– तनी हुई भौंहों के साथ लाल चेहरा चेहरा गुस्से का प्रतीक है।

अतः कहा जा सकता है कि इमोजी भावमूलक लिपि के ही उन्नत रूप हैं। हमारे पूर्वजों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिन भावचित्रों का इस्तेमाल किया, उन्ही भावों को वर्तमान समय में हम इमोजी के माध्यम से अभिव्यक्त करते है।

उद्देश्यः

सामान्य उद्देश्य– लिपियों की विकास परंपरा में भावमूलक लिपि का महत्व स्वयंसिद्ध है। सोशल मीडिया में बहुतायत से प्रचलित और लोकप्रिय विभिन्न प्रकार के इमोजी और स्माइली उसी भावमूलक लिपि के उन्नत रूप प्रतीत होते हैं। इसी तथ्य पर शोध करना इस परियोजना का सामान्य उद्देश्य है।

विशिष्ट उद्देश्य– इमोजी भावना, वस्तु या प्रतीक का दृश्य प्रतिनिधित्व हैं। इनका प्रयोग सोशल मीडिया में दृश्य संकेत भेजने के लिए किया जाता है। इनसे संबंधित तथ्यगत जानकारी संकलित करने का प्रयास करना इस परियोजना का विशिष्ट उद्देश्य है।

अध्ययन पद्धतिः

परियोजना के लिए शोध प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संग्रह के लिए संबंधित पुस्तकों, सामाजिक माध्यमों एवं इंटरनेट की मदद ली गई है।

लिपिः

भाषा का आधार ध्वनि है। ध्वनियाँ उच्चरित होती है और सुनी जाती है। इसकी कुछ सीमाएँ हैं– वह तभी सुनी जा सकती हैं जिस समय बोला जाता है और वहीं तक सुनी जा सकती हैं जहाँ तक आवाज जा सके। समय और स्थान के इसी बंधन से भाषा को मुक्त करने के लिए लिपि का जन्म हुआ।

आदिकाल से ही मनुष्य विचारों को सुरक्षित और स्थायी रूप प्रदान करने के लिए लिपि का प्रयोग करता रहा है। परंतु यह भी सत्य है कि भाषा के बाद ही लिपि का विकास हुआ।

डॉ. सीताराम झा 'श्याम' के शब्दों में – ''लिपि के उद्गम के संबंध में एक बात ध्यातव्य है कि किसी एक लिपि का अनुकरण कर सभी लिपियों का विकास संभव नहीं हो सकता। एक लिपि के आधार पर कुछ लिपियों का प्रचलन अथवा विकास हो सकता है, सभी लिपियों का नहीं। लिपि के उद्गम और विकास में स्थानीय परिस्थितियाँ और उपकरण बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। फिर, भाषा की प्रकृति लिपि के स्वरूप निर्धारण में सर्वाधिक प्रभाव डालती है।'' (श्याम, 463, 2003)।

भारतीय लिपियों का विकास ब्राह्मी लिपि से माना जाता है, जो छठी शताब्दी ई.पू. में प्रकाश में आई। वर्तमान में सारी भारतीय लिपियाँ ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं। साथ–ही–साथ भारत से इतर तिब्बती, दक्षिण–पूर्व एशिया आदि देशों की लिपियाँ भी ब्राह्मी से ही

प्रस्फुटित हुई हैं। आज जो लिपियाँ हमारे समक्ष हैं, वे लिपि का परिष्कृत तथा नवीन रूप हैं।

डॉ. शिवस्वरूप सहाय ने ब्राह्मी लिपि के संदर्भ में लिखा है – ''ब्राह्मी लिपि की कुछ मौलिक विशेषताएँ सामान्यतया दृष्टिगोचर होती हैं,जैसे इनका अन्य लिपियों की अपेक्षा अधिक कोणाकार होना, इनमें टेढ़े–मेढे अक्षरों का प्रयोग किया जाना आदि। प्रारंभ में इनमें दीर्घ मात्राओं का कुछ अभाव सा दिखता है, विशेषतः ई आदि का। अनुस्वार का प्रयोग भी इसमें प्रारंभ में नहीं के ही बराबर था। यहाँ दोहरे व्यंजनों का प्रयोग प्रायः नहीं मिलता है यथा पक्का के स्थान पर पका अर्थात एक व्यंजन से ही काम निकलने की परिपाटी का चलन था।'' (सहाय, 28, 2014)।

भावमूलक लिपिः

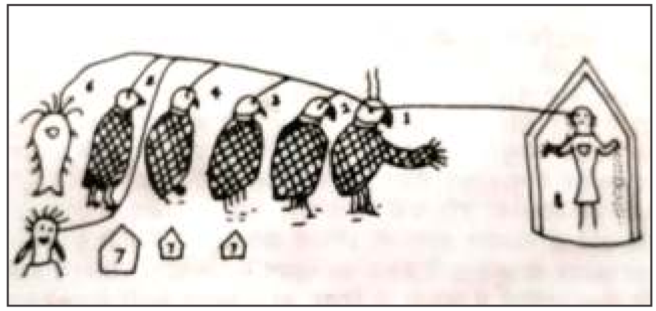
भावमूलक लिपि चित्र लिपि का विकसित रूप है। चित्र लिपि में सिर्फ वस्तुओं को व्यक्त करते थे, परंतु भावलिपि में ये चित्र भावों को भी व्यक्त करते हैं।

चित्र लिपि में किसी भी चित्र के माध्यम से केवल उसका अर्थ स्पष्ट होता है, जैसे–सफेद गोले का अर्थ चाँद होता है। वहीं भावमूलक लिपि में किसी भी चित्र में छिपा भाव स्पष्ट होता है,जैसे –चाँद का चित्र प्रेम, रोशनी तथा शीतलता का प्रतीक भी है। इसी प्रकार चित्र लिपि में कान का चित्र सिर्फ कान को ही दर्शाता है, परंतु भावमूलक लिपि में कान का अर्थ सुनना भी होता है। भावमूलक लिपि के उदाहरण चीन, पश्चिमी अफ्रीका, उत्तरी अमरीका आदि में मिलते हैं। इस लिपि के माध्यम से बड़े–बड़े एवं विभिन्न पत्र व्यवहार भी होते है।

इस लिपि का उपयोग कर बड़े–बड़े संदेश भेजे जाते हैं। यह अधिक ग्राह्य है। इस प्रकार भावमूलक लिपि में स्थूल वस्तुओं के अतिरिक्त भाव को भी व्यक्त किया जाता है। कभी–कभी चित्र लिपि के दो चित्रों को एक में मिलाकर भी भावमूलक लिपि में भाव व्यक्त किए जाते हैं। जैसे– सूर्य का गोला सूर्य का भी बोधक है और गर्मी का भी। भावमूलक लिपि चित्र लिपि तथा सूत्र लिपि की अपेक्षा अधिक समुन्नत तथा अभिव्यक्ति में सफल है। बहुत सी ऐसी लिपियाँ हैं, जिनके चिन्ह इससे प्रभाव ग्रहण करके बनाए गए हैं।

मनुष्य के भावपूर्ण संकेत लिपियों के विकास क्रम में आकार और अक्षरों में परिवर्तित हुए। इस प्रकार अक्षरों से शब्द एवं शब्दों से वाक्य बनने की प्रक्रिया चलती रही और भाषाओं की रचना होती गई। यही भाषाएँ आज संप्रेषण का माध्यम बनकर समाज की विभिन्न इकाइयों को एक सूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण दायित्व निभा रहीं हैं।

सचित्र उदाहरणः



''उत्तरी अमेरिका के एक रेड इंडियन सरदार ने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के प्रेसीडेंट के यहाँ एक पत्र अपनी भावमूलक लिपि में भेजा था। पत्र मूलतः रंगीन था, पर यहाँ उनका स्केच मात्र ही दिया जा सकता है। इसमें जो अंक दिए गए हैं, वे मूल पत्र में नहीं थे। समझने के लिए ये दे दिए गए हैं। पत्र पाने वाला (नं.8) ह्वाइट हाउस में प्रेसीडेंट है। पत्र लिखने वाला (नं.1)उस कबीले का सरदार है जिसका गणचिह्न (टोटेम) गरुड़ है। उसके सिर पर दो रेखाएँ यह स्पष्ट कर रही हैं कि वह सरदार है। उसका आगे बढ़ा हुआ हाथ यह प्रकट कर रहा है कि वह मैत्री–संबंध स्थापित करना चाहता है।" (तिवारी, 466, 2019)

इमोजीः

इमोजी भावमूलक लिपि का ही आधुनिक रूप है जिसका उपयोग हम अपनी मनःस्थिति एवं भाव को दर्शाने के लिए करते हैं। इसका उपयोग प्रमुखतः आधुनिक रूप से संवाद स्थापित करने वाले विभिन्न ऐप्स जैसे– व्हाट्सएप, फेसबुक ट्विटर, स्नैपचाट इत्यादि पर होता है।

इमोजी की शुरुआत जापान के एक मोबाइल फोन के माध्यम से हुई थी। जापान के ही 25 वर्षीय शिगेटका कुरिता ने इमोजी का पहला सेट तैयार किया था। इमोजी का इस्तेमाल 2010 में बहुतायत में होने लगा। 2010 के पश्चात् यह ज्यादातर मोबाइल सेट में नजर आने लगा।

इमोजी को ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में face with tears of joy के नाम से जोड़ा गया। 2015 में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी का word of year भी इमोजी ही था। विश्व इमोजी दिवस 17 जुलाई को मनाया जाता है।

सर्वप्रथम इमोजी के कीबोर्ड को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एप्पल कंपनी ने प्रस्तुत किया था। इमोजी की प्रसिद्धि तो इसी से स्पष्ट हो जाती है कि आज हर एक एंड्राइड मोबाइल फोन में इमोजी का कीबोर्ड उपलब्ध है तथा लोगों द्वारा इसका प्रयोग बहुत बड़े स्तर पर किया जा रहा है। बढ़ती प्रसिद्धि के साथ इमोजी के विभिन्न प्रकारों का भी विकास हुआ।

*वर्ष 1999 में इमोजी का सर्वप्रथम प्रयोग हुआ था। उस वक्त इसके वास्तविक सेट में सड़क जाम, मौसम, प्रौद्योगिकी और समय का चिह्न था।

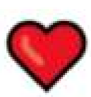
*2010 में यूनिकोड ने इसे अधिकारिक रूप से अपनाया तथा इसमें उन्होंने बहुत से खुशियों वाले इमोजी, गुस्सा, आँसू, क्रोध, बिल्लियों के चेहरे वाले इमोजी को जोड़ा।

*2015 में इमोजी में विविधता का अद्यतन किया गया, जिसमें पांच नए त्वचा के रंग एवं समलैंगिक जोड़ों को भी शामिल किया गया।

*2016 के अद्यतन में एकल पिता, ध्वज एवं वजन उठाती युवती का इमोजी रूप शामिल किया गया। वर्तमान में 3633 इमोजी यूनिकोड स्टैन्डर्ड में हैं।

इमोटिकॉन्सः

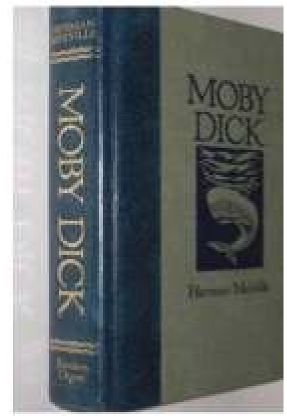
यह एक नया शब्द है, जिसका अर्थ है– भावनात्मक चिन्ह। सोशल मीडिया पर आजकल इमोटिकॉन्स भी प्रचलित एवं लोकप्रिय हैं। यह उन चिन्हों को कहा जाता है जिसमें अक्षर, विराम चिह्न और अंक का इस्तेमाल सचित्र चिह्न बनाने के लिए होता है। यह सामान्यतः भावना को दर्शाने के लिए होता है। जैसेः–

इमोजी	**इमोटिकॉन्स**
	:)
	B-I
	<3
	O:)
 .	:-P)
 .	3:)

पुस्तकों में इमोजी

1. इमोजी डिक : इमोजी वाली पुस्तक लिखने के क्षेत्र में सर्वप्रथम प्रयास 'इमोजी डिक' के साथ हुआ। यह आधुनिक इमोजी में लिखी गई पुस्तक थी। 763 पृष्ठ की यह पुस्तक एक आधुनिक मास्टर पीस है, जो फ्रेड बेनेंसन के द्वारा लिखी गई है। यह पुस्तक हर्मन मेलवाईल की पुस्तक मोबी डिक का जापानी अनुवाद है।





2. बुक फ्रॉम द ग्राउंड : जू बिंग की पुस्तक 'बुक फ्रॉम द ग्राउंड' ऐसी दूसरी पुस्तक है ,जो इमोजी से मिलते–जुलते अक्षरों में लिखी गई है। जू बिंग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त एवं प्रशंसित कलाकार हैं। इस पुस्तक को पूर्ण करने हेतु सामग्री एकत्रित करने, संपादित करने और हजारों चित्र लेखों को व्यवस्थित करने में उन्होंने 7 वर्षों का अमूल्य योगदान दिया।

सिनेमाः

आज सिनेमा भी इमोजी के प्रयोग से वंचित नहीं है। इसने सिनेमा के क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। 23 जुलाई 2017 में एक पारिवारिक हास्य फिल्म **द इमोजी मूवी** प्रदर्शित हुई थी। इस फिल्म की लंबाई 1 घंटा 26 मिनट की थी। यह फिल्म खूब लोकप्रिय हुई।

इसी शृंखला की दूसरी कड़ी है– द इमोजी मूवी –2,

जिसका निर्माण सोनी पिक्चर्स एनिमेशन ने किया है। इसके निर्देशक माइक मिचेल है तथा फिल्म को लिखने का श्रेय कृष राईट को दिया गया है। इस फिल्म का डिजिटल भाग सोनी पिक्चर्स द्वारा 31 जुलाई 2020 को real 3d और IMAX में प्रदर्शित किया गया है।

भावाभिव्यक्ति का नवीन माध्यम इमोजी युवाओं के बीच आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। कुछ इमोजी में चेहरे के भावों को दिखाया जाता है, तो कुछ में शरीर के विभिन्न अंगों के माध्यम से भाव को व्यक्त किया जाता है। वहीं कुछ अन्य भी हैं जो वस्तु, प्रकृति आदि के बोधक हैं। इमोजी को भी अनेक रूपों में प्रयोग किया जाने लगा। इसी से

संबंधित जीआईएफ तथा विभिन्न स्टिकर का भी उपयोग जोरों पर है। सोशल मीडिया में प्रचलित इमोजीज को कुछ इस प्रकार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. चेहरे वाला इमोजी
2. ऑब्जेक्ट्स इमोजी
3. प्रकृति तथा पशुओं से संबंधित इमोजी
4. भोज्य पदार्थ का इमोजी
5. यात्रा तथा स्थान इमोजी
6. प्रतीक इमोजी
7. क्रीडा संबंधी इमोजी



– यह ऐसी परिस्थिति को दिखलाता है

जिसमें इंसान इतना हँस रहा है कि उसकी आँखों से आँसू आ जाते हैं, जो खुशी के आँसू हैं।



– जुड़े हुए हाथ की आकृति

वर्तमान समय में प्रणाम,प्रार्थना, धन्यवाद इत्यादि के लिए संकेत रुप में इस इमोजी का प्रयोग प्रचलन में है।



– हँसता हुआ चेहरा

इसमें खुले मुँह और बंद आँखों के साथ हँसते हुए मुखाकृति को दिखलाया गया है। किसी हास्यास्पद बात या मजाक को पढ़ने के बाद चेहरे का जो भाव होता है ,उसे दिखाने के लिए इस इमोजी का प्रयोग किया जाता है।



– विजय सूचक चिन्ह

इसमें दो लगातार क्रम से आती उँगली को खड़ा करके दिखाया जाता है । जो विजय, सफलता, तथा उल्लास को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है।



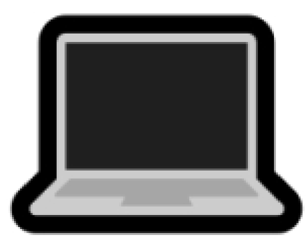
– मेडिकल मास्क का चेहरा

सामान्यतः मास्क का प्रयोग स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए किया जाता है। ठीक इसी प्रकार इस इमोजी में भी इसका प्रयोग स्वयं या दूसरों को संक्रमण से बचाव का संदेश देता है।



– गुस्से का चेहरा

तनी भौवों के साथ लाल तमतमाता चेहरा। इस इमोजी का प्रयोग अत्यधिक गुस्से को दिखाने के लिए किया जाता है।



– यह एक कंप्यूटर को दर्शाता है। जिसका प्रयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता है ।

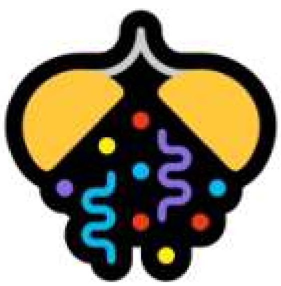


– फ्लैश के साथ कैमरा

यह उस स्थिति में प्रयुक्त होता है जब फोटो खींचा जा रहा हो। मतलब यह है कि फोटोग्राफी हो रही है या की जा सकती है।



– इस इमोजी से यह दिखाया जाता है कि आपका समय खत्म हो रहा है। समय अंत के कगार पर हैं। यह किसी विशेष प्रकार के समय की ओर इशारा करता है।'



– यह उत्सव का प्रतीक है। यह जन्मदिन, नव वर्ष तथा अन्य त्योहारों को उत्साह पूर्वक मनाने का सूचक है। इससे यह दर्शाया जाता है कि आनंद तथा पार्टी का माहौल है।



– यह इमोजी जापानी मान्यता पर आधारित है।

इमोजी में दिख रही लड़की एक जापानी गुड़िया है। वे बुरी आत्माओं को दूर करने तथा लड़कियों को अच्छे स्वास्थ्य के साथ–साथ अपने पसंद के साथी के साथ भाग्यपूर्ण होने का सूचक है।

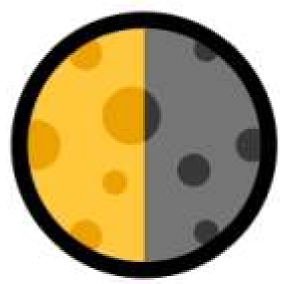


– इससे विशेष रूप से स्मार्ट तथा चालाक माना जाता है। पौराणिक परी कथाओं में इसका खूब वर्णन किया जाता था। धोखाधड़ी तथा विश्वासघात की स्थिति में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।



–यह राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के 3 सिद्धांतो

बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो तथा बुरा मत बोलो में से एक है – बुरा मत देखो। अतः बुरी चीजों को अनदेखा करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। साथ ही किसी परिस्थिति में शर्मिंदगी के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।



– यह चंद्रमा की विभिन्न कलाओं में से एक है।

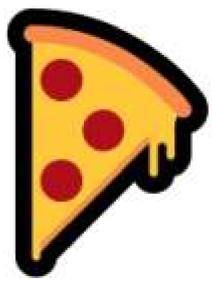
जिससे दिन का पता चलता है। कैलेंडर के उपयोग से पहले लोग चंद्रमा की स्थिति देखकर ही दिन का अनुमान लगाते थे।



– यह हरियाली का प्रतीक है। जब हम किसी को यह बताते हैं कि मानसून आ गया हैं, तब हम इसका प्रयोग कर सकते हैं।'



–यह इमोजी पानी के साथ बिजली कड़कने की स्थिति को बतला रहा है।



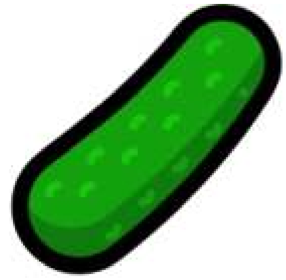
– पिज्जा जापान में खासा प्रसिद्ध है। दोस्तों के साथ की गई पार्टी तथा बिताए गए कुछ आरामदायक समय के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।



–यह प्रसिद्ध अमेरिकी मिष्ठान है। गर्मियों में इसे स्ट्रॉबेरी के साथ भी खाया जाता है। मीठी चीज की इच्छा व्यक्त करने तथा किसी को हल्के रूप से प्रलोभन देने के लिए भी इसका प्रयोग होता है।



–यह तरबूज का इमोजी है, जो सामान्यतः गर्मियों में फलता है। पानी की मात्रा अधिक होने के कारण लोग इसे गर्मी में खाते हैं।



–यह सलाद का एक अच्छा तत्व है। यह पौष्टिक है तथा खाने के साथ पेश किया जाने वाला आइटम हैं।



– रिवाल्विंग लाइट

यह सहायता के लिए प्रयोग किया जाता है। पुलिस विभाग की गाड़ी में, अग्नि शामक की गाड़ी में तथा एंबुलेंस में यह लाइट लगी होती है जो विशेष परिस्थिति या खतरे को दर्शाता हैं।यह चेतावनी तथा खतरे के लिए प्रयुक्त हैं।



– उड़न तश्तरी

यह तश्तरी फिल्मों में एलियंस के आगमन के समय दिखाया जाता है, फिल्मों में एलियन पृथ्वी पर इसी से आते हैं।



– विश्व मानचित्र

जल की अधिकता के कारण पृथ्वी को नीला ग्रह भी कहा जाता है, जैसा कि चित्र में भी स्पष्ट है। विश्व मानचित्र का यह इमोजी पूरी पृथ्वी को एक सतह के रूप में पेश करता है।

❖ 

–यह मुस्लिम धर्म का पवित्र स्थल है। यह धार्मिक तथा पवित्रता का प्रतीक है। हजारों की संख्या में मुस्लिम श्रद्धालु यहाँ जाते हैं। इस प्रकार के भाव को व्यक्त करने के लिए इस इमोजी का उपयोग किया जाता है।

❖ 

–नारंगी दिल आधे दिल से प्यार का प्रतीक है। यह उस स्थिति में उपयोग किया जाता है, जहाँ से दोस्ती का रिश्ता हो।

❖ 

–किसी खास मौके जैसे जन्मदिन सालगिरह शादी को मनाने में केक की खास भूमिका होती है। आज के समय में तो इसका प्रयोग और भी बढ़ गया है। सोशल मीडिया की विशेष उपलब्धि पर भी इसे काटा जाता है, इसी प्रयोजन में इसका प्रयोग होता है।

❖ 

–नीला दिल भरोसे, वफादारी तथा विश्वास के संबंध में उपयोगी है।

❖ 

– बढ़ती धड़कन को दिखाने के लिए इस इमोजी का उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष:

सामाजिक प्राणी होने के कारण विचार विनिमय मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। संप्रेषण के लिए वह विभिन्न तरीकों और माध्यमों का प्रयोग करता है। भाषिक संप्रेषण उन्ही में से एक है। भाषिक संप्रेषण दो प्रकार के होते हैं– मौखिक और लिखित।

लिखित संप्रेषण शब्दों के माध्यम से होता है, जिसके लिए लिपि की आवश्यकता होती है। लिपि के आरंभिक रूपों में भावमूलक लिपि का अलग महत्व है।

भावमूलक लिपि में चित्रों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति की जाती है। आज सोशल मीडिया और विभिन्न एप्स पर इमोजी का प्रयोग भी इसी रूप में होता है। इन्हें भावमूलक लिपि का तकनीकी रूप कहा जा सकता है, जो कहीं–न–कहीं भावमूलक लिपि से प्रभावित हैं और उसी के उन्नत तथा विकसित रूप प्रतीत होते हैं।

चित्र तथा चरित्र के अर्थ के बोधक इमोजी का प्रयोग मुख्यतः सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर किया जाता है। हम सभी विभिन्न ऐप्स पर इमोजी का प्रयोग कर आपस में संवाद स्थापित करते हैं। यह बातचीत का एक आधुनिक और डिजिटल तरीका है। इसके माध्यम से बिना शब्दों के नवीन चित्र तकनीक के द्वारा भावों की अभिव्यक्ति होती है। जैसे– मुख की विभिन्न आकृति के माध्यम से हृदय के भावों को प्रस्तुत करना, पेड़–पौधे या जीव–जंतुओं के इमोजी का प्रयोग कर उस पौधे या जीव को दर्शाना, भावाभिव्यक्ति के लिए उँगलियों की विभिन्न मुद्राओं का प्रयोग करना आदि। फूल,दिल,केक,ट्रॉफी,जूते,झंडे आदि अनेक चित्र भी भावों के संप्रेषण में प्रयुक्त हो रहे हैं।

आज मोबाईल और इंटरनेट के डिजिटल रूप में इमोजी अभिव्यक्ति के सशक्त,सरल,प्रचलित तथा लोकप्रिय माध्यम बनकर उभरे हैं। अत्याधुनिक विकसित तकनीक के आगमन से सामाजिक माध्यम के विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि पर इमोजी के अलग–अलग प्रकार देखने को मिलते हैं, जिनका प्रयोग विश्व के कोने–कोने में किया जाता है। आज मनुष्य

इमोजी के माध्यम से अपने हाव–भाव और दुःख–सुख की भावनाओं को बिना शब्दों और बिना लिपि के प्रकट करने में सक्षम हैं।

इस प्रकार लिपियों के स्थान पर अब इमोजी को प्राथमिकता दी जा रही है। इमोजी भावाभिव्यक्ति का नवीन, सशक्त और तकनीकी माध्यम हैं। वर्तमान पीढ़ी धड़ल्ले से इन इमोजी का प्रयोग कर रही है। यह हमारे दैनिक जीवन में सम्प्रेषण की अनिवार्यता बन गए हैं। इनका प्रयोग समय की माँग है। लोग संदेशों के आदान–प्रदान में इमोजी के कारण सहूलियत महसूस करते हैं। ये विचार–विनिमय की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं। इमोजी के प्रयोग से विषय वस्तु और अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है। उदाहरण स्वरूप क्रोधपूर्ण वाक्य के साथ लाल तमतमाता चेहरा यह स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है कि व्यक्ति पूर्णतः गुस्से में है।

निष्कर्षतः इमोजी और भावमूलक लिपि के अंतर्संबंध को नकारा नहीं जा सकता। इमोजी की उत्पत्ति के मूल में भावमूलक लिपि से अवश्य प्रेरणा ली गई है। अतः उन्हें उनका उन्नत तथा डिजिटल रूप कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ स्रोतः

तिवारी, भोलानाथ. (2019). भाषा विज्ञान . इलाहबादः किताब महलः

श्याम, डॉ. सीताराम झा. (2003). भाषा विज्ञान तथा हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण . पटनाः बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमीः

सहाय, डॉ. शिवस्वरूप. (2014). भारतीय पुरालेखों का अध्ययन. दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।

Websites :

इमोजी क्या है. https://hindime.net/emoji-kya-hai-hindi/ (अभिगमन तिथिः 3 / 10 / 2021)

द इमोजी मूवी. (अभिगमन तिथिः 30 / 09 / 2021) https://en.m.wikipedia-org/wiki/The_Emoji_movie-

दैनिक भास्कर 7 साल का हुआ वर्ल्ड इमोजी डे (अभिगमन तिथिः 28 / 09 / 2021). bhaskar.com

नोवाक, जेफ (2017). 3 किताबें पूरी तरह इमोजी में लिखी गई हैं, क्या आप उन्हें पढ़ सकते हैं?. (अभिगमन तिथिः 27 / 09 / 2021) . medium.com

https://www.emojimeanings.in/list-animals-nature-whatsapp (अभिगमन तिथिः 2 / 10 / 2021)

संगीता (2020). 17 जुलाईःविश्व इमोजी दिवस . (अभिगमन तिथिः 4 / 10 / 2021) . https:// sangeetaspen.com/17-july-world-emoji-day/